भगवान बुद्ध की अग्रउपासिका

विसाखा मिगारमाता

दायिकाओं (दान देने वालियों) में 'अग्र'

विपश्यना विशोधन विन्यास

भगवान बुद्ध की अग्रउपासिका

विसाखा मिगारमाता

[दायिकाओं (दान देने वालियों) में 'अग्र']

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

****

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

“एतदग्गं, भिक्खवे, मम साविकानं उपासिकानं दायिकानं यदिदं विसाखा मिगारमाता।”

“भिक्षुओ! मेरी उपासिका श्राविकाओं में ये अग्र हैं - दायिकाओं में अग्र विसाखा मिगारमाता।”

– अङ्गुत्तरनिकाय (१.१.२५९)

****

विसाखा मिगारमाता

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय [vii]

विसाखा मिगारमाता.....१

जन्म १
सोतापत्तिफलप्राप्त १
कोसलनरेश पसेनदि द्वारा श्रेष्ठी की मांग २
पंचविध कल्याण-संपन्न कन्या की खोज ३
सर्वगुण-संपन्न विसाखा ५
विसाखा की स्वीकृति ६
राजा पसेनदि का विवाहोत्सव में शामिल होना . . . ८
अतिथि-सत्कार ८
महालतापसाधन ९
अतिथिदेवो भव ९
कन्यादान १०
पिता द्वारा पुत्री को दस उपदेश ११
विसाखा की विदाई १२
विसाखा का ससुराल में आगमन १३
सेवा-भाव १३
मिथ्या अरहंत १३
बासी भोजन १४
निर्दोष विसाखा १५
दस उपदेश : नारी-जीवन के अनुकरणीय आदर्श . . १५
विसाखा मिगारमाता १८
परिवार एवं शारीरिक सौंदर्य २०
बलशालिनी विसाखा २०
महालतापसाधन को विहार में भूलना २१
विसाखा द्वारा विहार का निर्माण २२
विसाखा की सखी द्वारा वस्त्रदान २४
विसाखा का महादान २४

भगवान द्वारा विसाखा को उपदेश २६

दूसरों पर निर्भर होना दुःख २६
वाद-विवाद से अलगाव कैसे? २६
प्रिय से ही दुःख २७
मनापकायिक देवियों की संगति २९
लोक तथा परलोक के विजय-मार्ग पर आरूढ़ स्त्री . ३१
तीन प्रकार के उपोसथ ३४

विसाखा मिगारमाता और विनय ४४

वर्षावास में प्रव्रज्या ४४
रत्न अथवा रत्नसम्मत वस्तु के बारे में निर्देश . . . ४४
विसाखा को आठ वर ४५
विसाखा द्वारा अन्य वस्तुओं का दान ५०

विविध प्रकरण ५१

स्थान की रमणीयता ५१
भव-चक्र ५२
निकृष्ट धर्मों से संवर ५२
सुरा-पान के दुष्परिणाम ५४
निर्दोष प्रव्रज्या ६०
विवेकहीन भिक्षु ६१

संकल्प पूर्ण हुए.....६४

भगवान पदुमुत्तर का शासनकाल ६४
भगवान कस्सप तथा गोतम का शासनकाल . . . ६५

विपश्यना साहित्य ६६
विपश्यना साधना केंद्र ६९

प्रकाशकीय

साकेत में बसे धनञ्चय श्रेष्ठी की पुत्री विसाखा, सात वर्ष की उम्र में भगवान के संपर्क में आयी। अपने पूर्व पुण्य के कारण वह सोतापन्न हुई। जब सोलह वर्ष की हुई तब पिता ने उसका विवाह सावत्थी के मिगारश्रेष्ठी के पुत्र से कर दिया। तदनंतर वह सावत्थी में आ बसी।

ससुराल जाने से पहले विसाखा के पिता ने उसे दस उपदेश दिये। ये उपदेश आज भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जितने कि २,६०० वर्ष पूर्व के भारत में भी थे। इन उपदेशों पर आचरण करती हुई कोई भी सद्गृहिणी अपने सद्गृहस्थी के घर-आँगन में सुख-शांति को सँजोये रख सकती है।

विसाखा का श्वसुर मिगारश्रेष्ठी बहुत ही कंजूस और शक्की स्वभाव का था। बात-बात में विसाखा को लांछित करता और कुपित होता रहता था। नौबत यहां तक आ गयी कि उसने नौकरों को आज्ञा दी कि विसाखा को घर से बाहर निकालो। पंडिता, चतुर, मेधाविनी विसाखा अपनी सूझबूझ से विरोधी स्वभाव वाले श्वसुर को शुद्ध धर्म के पथ पर ले आयी। त्रिरत्न की शरण में आकर श्वसुर मिगार निहाल हो उठा। अज्ञानता का अंधकार छँटा, बोधि जागी तो उसका चित्त विसाखा के प्रति कृतज्ञता से भर उठा। वह बोल उठा - "अंधकार की खोल से निकाल, धर्मपथ पर लाने वाली तू मेरी माता है।"

श्वसुर मिगार ने पुत्रवधू विसाखा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए भगवान से कहा - "मेरी पुत्रवधू के कारण मुझे यह ज्ञान, यह धर्म प्राप्त हुआ। बहू इस घर में आकर मेरे कल्याण, मेरे मंगल का कारण बनी। आज मैंने जान लिया कि कहां देने से महान फल होता है। मैं इसे मातृस्थान पर रखता हूं।" तभी से विसाखा मिगारमाता कहलायी।

दानादि पुण्य-पारमिताओं की वजह से विसाखा अद्भुत गुणों से संपन्न थी। विसाखा में पांच हाथियों का बल था। एक सौ बीस वर्ष की अवस्था में उसके सिर का एक बाल भी श्वेत न था। इस अवस्था में भी वह तरुणी-सी लगती थी।

भगवान ने समय समय पर विसाखा को अनेक उपदेश दिये, यथा -

(i) दूसरों पर निर्भर होना सब प्रकार का दुःख है; सब प्रकार का प्रभुत्व सुख है।

(ii) इस संसार में प्रिय से ही दुःख उत्पन्न होता है। जिनके जितने प्यारे हैं, उनके उतने ही दुःख हैं। जिनको कोई प्यारा नहीं है, उनको कोई दुःख भी नहीं है। जिनका संसार में कहीं कोई प्रिय नहीं है, वे ही सुखी और शोकरहित हैं।

(iii) आठ गुणों से युक्त स्त्री शरीर छूटने पर, मरने के उपरांत मनापकायिक देवियों की संगति में उत्पन्न होती है। अपने कर्मांत की सम्यक व्यवस्थापिका, अपने परिजनों का संग्रह करने वाली, पति की इच्छा के अनुकूल आचरण करने वाली तथा कमाये हुए की रक्षा करने वाली स्त्री इस लोक के विजय मार्ग पर आरूढ़ होती है। श्रद्धा, शील, त्याग तथा प्रज्ञा से संपन्न स्त्री परलोक के विजय मार्ग पर आरूढ़ होती है।

(iv) भगवान ने विसाखा को गोपाल-उपोसथ, निर्ग्रंथ-उपोसथ तथा आर्य-उपोसथ के बारे में विस्तार से देशना दी।

विसाखा के निवेदन पर भगवान ने वर्षावास की अवधि में भी लोगों के लिए प्रव्रज्या का मार्ग खुला रखा। विसाखा ने भगवान को अंगोछा, घड़ा, झाड़ू, पंखे इत्यादि का दान दिया। भगवान ने शिक्षापदों को प्रज्ञापित कर भिक्षुओं को इन वस्तुओं को उपयोग में लाने की अनुमति प्रदान की।

विसाखा ने सम्यक-संबुद्ध पदुमुत्तर तथा कस्सप के समक्ष किसी भावी सम्यक-संबुद्ध के काल में आठ वर प्राप्त करने का संकल्प लिया। भगवान गोतम बुद्ध से ये आठ वर प्राप्त कर उसके संकल्प पूर्ण हुए। भगवान ने इन आठ वस्तुओं को स्वीकार करने की अनुमति प्रदान की - वर्षिकसाटिका, नवागंतुक-भोजन, गमिक-भोजन, रोगी-भोजन, रोगी-परिचारक-भोजन, रोगी-भेषज, सदा के लिए यवागु और भिक्षुणी-संघ हेतु उदकसाटी।

भगवान ने विसाखा को आठ वर देकर उसका अनुमोदन किया - "जो शीलवती, सुगत की शिष्या प्रमुदित हो अन्न-पान देती है; कृपणता को

छोड़ शोक-हारक, सुखदायक, स्वर्गप्रद दान को देती है; वह निर्मल, निर्दोष मार्ग को या दिव्यबल और आयु को प्राप्त होगी।"

विसाखा ने संपूर्ण चातुर्मास में भगवान बुद्ध एवं भिक्षुसंघ को दान दिया। अंतिम दिन भिक्षुओं को चीवरदान दिया। नौ करोड़ मुद्रा की भूमि, नौ करोड़ विहार-निर्माण तथा नौ करोड़ विहारोत्सव मनाने में खर्च किये। इस प्रकार सत्ताईस करोड़ मुद्रा खर्च कर महादान दिया। ऐसी पुण्यशालिनी थी विसाखा! ऐसा उदाहरण स्त्रियों में शास्ता के समय दूसरा न हुआ।

पुरुषों में अनाथपिण्डिक ने चौपन करोड़ खर्च कर जेतवन महाविहार का निर्माण करवाया तो विसाखा ने पुब्बाराम का। भगवान इन दोनों के प्रति विशेष अनुकंपा रखते थे। सावत्थी में भगवान एक वर्षावास जेतवन में तो दूसरा पुब्बाराम में व्यतीत करते थे। इसलिए बार-बार बुद्धवाणी में शब्द आते हैं - **"पुब्बारामे मिगारमातुपासादे"**, अर्थात मिगारमाता के पुब्बाराम विहार में। इसी कारण भगवान ने विसाखा को दान में अग्र की उपाधि दी।

आओ! विसाखा मिगारमाता के जीवन के अनुकरणीय आदर्शों पर चलते हुए इस भगवद्वाणी को सही मायने में चरितार्थ करें।

यथापि पुप्फरासिम्हा, कयिरा मालागुणे बहू।
एवं जातेन मच्चेन, कत्तब्बं कुसलं बहुं॥

[जैसे (कोई व्यक्ति) पुष्प-राशि से बहुत सी मालाएं बनाये, ऐसे ही उत्पन्न हुए प्राणी को बहुत-सा कुशलकर्म (पुण्य) करना चाहिए।]

विपश्यना विशोधन विन्यास